ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-19-01-2021 ***कैकेयी का अनुताप***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।"
चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी-स्वर को।
सबने रानी की ओर अचानक देखा,
वैधव्य-तुषारावृता यथा विधु-लेखा।
बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा,
वह सिंही अब थी हहा! गोमुखी गंगा-
हाँ, जनकर भी मैंने न भरत को जाना,
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना

यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।

शब्दार्थ अटल-जो टलने वाला न हो, स्थिर ।वैधव्य-विधवापन:
तुषारावृता- कुहरे से ढकी हुई; विध-लेखा-चन्द्रमा की रेखा, चाँदनी. अचल-स्थिर;
असंख्यतरंगा-अनगिनत लहरों वाली; सिंही-सिंहनी: हहा-दीनता का भाव पूर्ण;
गोमुखी-गाय के मुख वाली; जनकर-जन्म देकर; अपराधिन-दोषी।

प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'कैकेयी का अनुताप' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रस्तुत पद्यांश में राम की बात सुनकर माता कैकेयी स्वयं को दोषी सिद्ध करती हुई उनसे अयोध्या लौटने की बात कहती हैं।

व्याख्या राम की इस बात को सुनकर कि भरत को स्वयं उसकी माता भी न पहचान सकी, कैकेयी कहती हैं कि यदि यह सच है, तो अब तम अपने घर लौट चलो अर्थात् मेरी उस मूर्खता को भूलकर अयोध्या। चलो. जिसके परिणामस्वरूप मैंने तुम्हारे लिए वनवास की माँग की थी।

- दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है,
  पर, अबलाजन के लिए कौन-सा पथ है?
  यदि मैं उकसाई गई भरत से होऊँ,
  तो पति समान ही स्वयं पुत्र भी खोऊँ.
  ठहरो, मत रोको मुझे, कहूँ सो सुन लो
  पाओ यदि उसमें सार उसे सब चुन लो।
  करके पहाड़-सा पाप मौन रह जाऊँ?"
  राई भर भी अनुताप न करने पाऊँ?"
  थी सनक्षत्र शशि-निशा ओस टपकाती,
  रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती।

उल्का-सी रानी दिशा दीप्त करती थी,
सबमें भय-विस्मय और खेद भरती थी।

शब्दार्थ शपथ-सौगन्ध; अबलाजन-नारियाँ पथ-मार्ग; उकसाना-बहकाना; सार-निचोड़, यथार्थ बात; पहाड़-सा पाप-घोर अपराध; राई भर-बहुत थोड़ा; अनुताप-पश्चाताप, पछतावा; सनक्षत्र-तारों सहित; शशि-निशा-चाँदनी रात: नीरव-शान्त; उल्का-टूटकर गिरने वाला तारा: दीप्त-प्रकाशित; विस्मय-आश्चर्य; खेद-दुःख।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने कैकेयी के पश्चाताप को अपूर्व ढंग से अभिव्यंजित किया है।

कैकेयी, भरत की सौगन्ध खाते हुए राम से कहती हैं कि सौगन्ध खाने से व्यक्ति की दुर्बलता प्रकट होती है, परन्तु स्त्रियों के लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं हैं। वह राम को सम्बोधित करते हुए कहती हैं कि हे राम! मुझे तुम्हारे वनवास के लिए भरत ने नहीं उकसाया था। यदि यह सच नहीं तो मैं पति के समान ही। अपना पुत्र भी खो दूँ। मुझे यह कहने से कोई न रोके। मैं जो कह रही हैं, सभी सुन लें। यदि मेरे कथनों में कोई यथार्थ बात हो तो उसे ग्रहण कर लें। मुझसे यह न सहा। जा सकेगा कि मैं इतना बड़ा पाप करके थोड़ा भी पश्चाताप प्रकट न करूँ और मौन रह जाऊँ।

कैकेयी के यह सब कहने के दौरान तारों से भरी चाँदनी रात ओस के रूप में अश्रु-जल बरसा रही थी और नीचे मौन सभा हृदय को थपथपाते हुए रुदन कर रही थी। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि कैकेयी के हृदय-परिवर्तन और उनके पश्चाताप को देख सभा में उपस्थित सभी लोगों की संवेदना उनके साथ थी मानो सभासद सहित प्रकृति ने भी उन्हें उनके अपराध के लिए क्षमा कर दिया हो।
रानी कैकेयी, जिसने अपनी अनुचित माँग से पूरे अयोध्या और वहाँ के निवासियों का जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया था, आज पश्चाताप की अग्नि में जलकर चारों ओर सदभाव की किरणें बिखेर रही थीं। उनके इस नए रूप के परिणामतः वहाँ उपस्थित लोगों में एक साथ भय, आश्चर्य और शोक के भाव उमड़ रहे थे।

क्रमशः

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे के अर्थ को लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'